

# डॉ. क्रेग कीनर , रोमन्स, व्याख्यान 6, रोमियों 3 :24-5 :11

© 2024 क्रेग कीनर और टेड हिल्डेब्रांट

यह रोमन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह रोमियों 3:24-5:11 पर सत्र संख्या 6 है।

पिछले सत्र में, हमने इस बारे में बात की थी कि कैसे हर कोई समान रूप से खोया हुआ है, चाहे वह यहूदी हो या गैर-यहूदी।

इसलिए, पॉल यह तर्क देने जा रहा है कि हम सभी एक ही शर्तों पर भगवान के पास आते हैं, और भगवान ने यीशु मसीह में उपहार के रूप में हमारे लिए ये शर्तें प्रदान की हैं। अब, इस बात पर कुछ बहस है कि क्या श्लोक 24 और 25 पूर्व-पॉलिन परंपरा हैं, लेकिन किसी भी तरह से, यह निश्चित रूप से कुछ ऐसा है जिस पर पॉल का विश्वास था क्योंकि वह इसका उपयोग करता है। वह एक उपहार के रूप में, ईश्वर की कृपा से एक उपकार के रूप में धर्मी बनाए जाने की बात करता है, एक ऐसा शब्द जिसका अर्थ अलग-अलग चीजें हो सकता है, लेकिन अक्सर इसका अर्थ उदारता होता है।

यह कुछ ऐसा था जो एक परोपकारी देगा, और अनुग्रह के प्रति आपकी प्रतिक्रिया परोपकारी को सम्मान देना होगा। श्लोक 24. वह यहाँ मुक्ति की भी बात करता है।

उन्हें यहां बहुत सारे शब्दों का संग्रह मिला है जिनमें पुराने नियम की बहुत महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि है। मुक्ति का उपयोग दासों की मुक्ति के लिए किया गया था और इसलिए यह दर्शाता है कि भगवान ने निर्गमन में क्या किया था। जब हम अध्याय आठ पर पहुँचेंगे तो हम न्यू एक्सोडस की अवधारणा के बारे में अधिक बात करेंगे।

पुराने नियम के यूनानी अनुवाद में एक संबंधित क्रिया है। इसमें कभी-कभी फिरौती की कीमत भी शामिल होती है, जो आमतौर पर पहले ग्रीक में निहित होती थी। इसे यहां निहित करने की आवश्यकता नहीं होगी, लेकिन यहां का संदर्भ यीशु के खून की ऐसी कीमत का सुझाव दे सकता है।

आपका यह विचार इब्रानियों 9:14 और 15, 1 पतरस 1:18 और 19, और शायद प्रकाशितवाक्य 1:5 और 5:9 में है। तो, एक विचार जो प्रारंभिक ईसाई धर्म में काफी व्यापक है। पाप मुक्ति। हमारी मुक्ति भविष्य में रोमियों अध्याय आठ और श्लोक 23 में पूरी होती है, जहाँ हम कराह रहे हैं, अपने शरीर की पूर्ण मुक्ति की प्रतीक्षा कर रहे हैं।

हमारे पास स्पष्ट रूप से अभी तक हमारे पुनरुत्थान वाले शरीर नहीं हैं, खासकर जब आप मेरी उम्र तक पहुँचते हैं, तो आप इसके बारे में अच्छी तरह से जानते हैं, लेकिन यह भविष्य में पूरा हो

जाता है। इफिसियों 1.14 इसका इस प्रकार उपयोग करता है। इफिसियों 4:30, लूका अध्याय 21, पद 38, ऊपर देखो, तुम्हारा छुटकारा निकट आ गया है।

लेकिन यहां यह पहले ही हो चुका है। मुझे लगता है कि हमने पहले से ही अभी तक नहीं के बारे में बात की है। हमें अपनी भावी विरासत का पूर्वाभास हो गया है।

निश्चित रूप से कीमत पहले ही चुकाई जा चुकी है। इसे हमारे जीवन में साकार करने के लिए जो कुछ करने की आवश्यकता है उसे ईश्वर ने पहले ही पूरा कर लिया है। इसलिए, हमारे पास अभी तक हमारे शरीर की मुक्ति नहीं है, लेकिन सिद्धांत रूप में, हाँ, हमारी मुक्ति है क्योंकि हमने पहले ही मसीह को स्वीकार कर लिया है, और विशेष रूप से कार्य पहले ही पूरा हो चुका है।

उसे जो करने की ज़रूरत थी उससे उसने हमें पहले ही आज़ाद कर दिया है। आप स्वतंत्रता की भाषा को अध्याय छह, छंद छह से 23, 7:25, 8:15 और 21 में भी नोट कर सकते हैं। मुक्ति का मतलब है कि आप स्वतंत्र हो गए हैं।

वह श्लोक 25 में वाचा के सन्दूक के आवरण के बारे में बात करते हैं। वह हिलास्टरियन शब्द का उपयोग करते हैं, जो संज्ञानात्मक, हिलाज़मोस और कुछ अन्य शब्द हैं जिन्हें अक्सर इस संदर्भ में उद्धृत किया जाता है। लेकिन विशेष रूप से श्लोक 25 में हिलास्टरियन, यह वाचा के सन्दूक के आवरण को संदर्भित करता है।

निर्गमन 25:17-22 के यूनानी अनुवाद में आप इसे इसी प्रकार प्रयुक्त पाते हैं। आप इसे इब्रानियों के अध्याय नौ के श्लोक पाँच में वाचा के सन्दूक के संदर्भ में पाते हैं। इस अनुवाद को ओरिजन, लूथर और टिंडेल ने मान्यता दी थी, इसलिए इसके पीछे एक लंबा इतिहास है। तुलना का मतलब क्या है? यीशु और क्रूस किस प्रकार वाचा के सन्दूक के आवरण के समान हैं? खैर, वाचा का सन्दूक दैवीय उपस्थिति का स्थान था, लेकिन इसका उपयोग प्रायश्चित के दिन के अनुष्ठान के लिए भी किया जाता था।

यह यीशु के खून के उल्लेख के बाद है, और इसलिए इसका संभवतः उस स्थान से संबंध है जहां यीशु का खून बहाया गया है। सूली पर चढ़ना हमेशा खूनी नहीं था, हालाँकि कुलुस्सियों और गॉस्पेल में उल्लेख है कि यीशु को सूली पर चढ़ाया गया था, इसलिए उनके मामले में खून हुआ होगा। लेकिन सूली पर चढ़ाना हमेशा खूनी नहीं था, हालाँकि वास्तव में कोड़े मारने के साथ यह संभवतः सामान्य रूप से था।

हालाँकि, सुसमाचार में यीशु की मृत्यु की घटना से अधिक उसकी मृत्यु के अर्थ का वर्णन करने के लिए रक्त का उपयोग किया गया है। यानी, हाँ, उसका खून बहाया गया था, लेकिन उसका खून किस लिए बहाया गया था? प्रायश्चित के दिन के संबंध में, इस पवित्र स्थान का वार्षिक अभिषेक बलिदान के रक्त के माध्यम से हुआ, लैव्यिकस 16 छंद 14 और 15। यीशु वह स्थान है जहां क्षमा किए गए लोग भगवान से मिलते हैं क्योंकि भगवान ने हमारे लिए प्रायश्चित प्रदान किया है।

ठीक है, सीएच डोड, एक बहुत अच्छे विद्वान, उनके पास कई अच्छे विचार थे, लेकिन उन्हें संदेह है कि पुराने नियम में इसका अर्थ प्रायश्चित है। दरअसल, मैंने देखा है कि कुछ विद्वान उन सभी उदाहरणों का हवाला देते हैं जहां इसका मतलब यह नहीं है और उन सभी उदाहरणों को छोड़ देते हैं जहां इसका मतलब यह नहीं है। लेकिन फिर भी, पाप और प्रायश्चित प्रसाद ने क्रोध को शांत किया।

यह पुराने नियम और प्राचीन निकट पूर्व दोनों में सच था। मेरा मतलब है, हितियों के पास इसके लिए अनुष्ठान थे इत्यादि। यह तम्बू के संदर्भ में भी फिट बैठता है, रक्त को बलि की मृत्यु के रूप में।

इसके अलावा, यह प्रारंभिक ईसाई धर्म, प्रायश्चित और शुद्धिकरण में कहीं और दिखाई देता है, 1 पतरस 1:2.19, 1 जॉन 1:7। यीशु का बलिदान रक्त वाचा का उद्घाटन करता है। हमारे पास यह भाषा निर्गमन 24 :5 और 8 से अंतिम भोज के अंशों में है जहां यीशु बोल रहे हैं, 1 कुरिन्थियों 11:25, मरकुस 14:24। हमारे पास उसका रक्त, बलिदान रक्त भी है, जो इब्रानियों 9.18-20, 10.29, 12.24, 13.20 में वाचा का उद्घाटन करता है। इस अर्थ में इब्रानियों एक खूनी किताब है। कुछ अन्य लोगों ने हिलास्टेरियन का प्रयोग आलंकारिक रूप से किया।

4 मैकाबीज़ 17:22, शायद पहली शताब्दी से, लोगों से भगवान के क्रोध को दूर करने के लिए मानव मृत्यु द्वारा दिए गए प्रायश्चित की बात करता है और उसी भाषा, हिलेस्टेरियन का उपयोग करता है। 4 मैकाबीज़ का संदर्भ, पूर्ववर्ती कविता, फिरौती की बात करता है। तो, एक भुगतान जो पेश किया गया है।

एक अलग शब्द है, लेकिन शहीद प्रायश्चित का विचार इससे पहले 2 मैकाबीज़ 7 में और 4 मैकाबीज़ 6 में भी प्रकट होता है। विचार यह है कि एक व्यक्ति की पीड़ा या कई लोगों की पीड़ा लोगों से भगवान के क्रोध को दूर कर सकती है क्योंकि वे दूसरे के स्थान पर कष्ट उठाओ। तो, यह विचार इस समय यहूदी धर्म में पहले से ही उपलब्ध था। इसकी पृष्ठभूमि के संदर्भ में इस पर कई अध्ययन हुए हैं, जिनमें जिते किम भी शामिल हैं, जिन्होंने विभिन्न प्राचीन यहूदी हलकों में प्रायश्चित की अवधारणा पर कई लेख प्रकाशित किए, वास्तव में अपना शोध प्रबंध प्रकाशित किया।

मार्टिन हेंगेल ने वहां कुछ लोगों के साथ काम किया है, खासकर ग्रीक हलकों में, लेकिन जिते किम ने इसे विकसित किया है, खासकर यहूदी हलकों में। खैर, प्रायश्चित होने का विचार रोमनों पर फिट बैठता है। यह भगवान के क्रोध के वर्तमान संदर्भ में फिट बैठता है।

रोमियों 1:18, 2.5 और 8, 3:5, 4:15। वह इस संदर्भ में क्रोध के बारे में बहुत सारी बातें कर रहे हैं। आज कुछ धर्मशास्त्रियों द्वारा परमेश्वर के क्रोध को शांत करने के बारे में बात करना पसंद न करने का एक कारण यह है कि उन्हें क्रोधी परमेश्वर का विचार पसंद नहीं है। लेकिन यदि आप कहते हैं कि ईश्वर का क्रोध नहीं है, तो आपको बहुत सारे धर्मग्रंथों की व्याख्या करनी होगी।

अब, आप कह सकते हैं कि उसका क्रोध हमसे भिन्न है। उनका क्रोध सिर्फ अपना आपा नहीं खो रहा है। उसका क्रोध न्याय पर आधारित है।

आप ऐसा कह सकते हो। यह एक अलग श्रेणी का है। हो सकता है कि क्रोध की कल्पना करने का हमारा तरीका अलग हो, लेकिन आप यह नहीं कह सकते कि यह क्रोध नहीं है जिसे शांत किया जा सकता है, कि यह समझ मौजूद थी।

हम इसे अध्याय 5, श्लोक 9 और 10 में भी पाते हैं, जहाँ यह कहा गया है कि यीशु का खून परमेश्वर के क्रोध को हमसे दूर कर देता है। अध्याय 8, श्लोक 3 में, ऐसी भाषा का उपयोग करता है जो पेरी हमारियास है, लेकिन जिस तरह से अभिव्यक्ति का उपयोग सेप्टुआजिंट में किया जाता है, वह वहाँ जो अनुवाद करता है, उसे देखते हुए, यह अध्याय 8, श्लोक 3 में यीशु की मृत्यु को बलिदान के रूप में भी व्यक्त कर सकता है। और यह रोमनों तक ही सीमित नहीं है। मेरा मतलब है, पॉल यीशु की मृत्यु को मसीह के रूप में बोलता है, 1 कुरिन्थियों 5:7 में हमारे लिए फसह के मेमने की बलि दी जाती है, मेरा मानना है, इत्यादि।

और इस काल में फसह को एक बलिदान के रूप में समझा जाता था। आप इसे जोसेफस में देख सकते हैं। मेरा मानना है कि आप इसे एक्सोडस में देख सकते हैं।

लेकिन किसी भी मामले में, पॉल का कहना है कि भगवान ने पहले पापों को वह सजा देने के बजाय उन्हें छोड़ दिया था जिसके वे उचित हकदार थे, पद 25। पैरेसिस का मतलब सजा को स्थगित करना या उपेक्षा करना था। इसका मतलब यह नहीं था कि यह नहीं आएगा, लेकिन इसे स्थगित करना या उपेक्षा करना क्योंकि वह जानता था कि वह बाद में कुछ प्रदान करने वाला था।

इसलिए अब वह अपनी धार्मिकता का प्रदर्शन करता है। वह धर्मी भी है और वह भी जो अपने लोगों को अपने साथ ठीक करेगा क्योंकि उसकी प्रायश्चित मृत्यु के द्वारा यीशु पर पहले ही न्याय की सजा लागू हो चुकी है। परमेश्वर की धार्मिकता में न्याय और वाचा की निष्ठा दोनों शामिल हैं, 1:17 और 18, अध्याय 3, श्लोक 3 से 8। परमेश्वर सिर्फ पाप को दंडित करने के लिए है।

परमेश्वर पापों को क्षमा करने और अपनी वाचा के प्रति सच्चा होने के लिए भी न्यायसंगत है क्योंकि परमेश्वर इतना विश्वासयोग्य है कि उसने हमें क्षमा किए जाने का एक मार्ग प्रदान किया है। अब, यदि हम उस तरीके को अस्वीकार करते हैं, तो यह भगवान की गलती नहीं है। उसने हमें उसे स्वीकार करने या अस्वीकार करने की अनुमति दी है, लेकिन उसने हमारे लिए रास्ता बना दिया है।

इसलिए, आत्म-घमंड न करें, अध्याय 3, पद 27। यदि व्यवस्था का लक्ष्य कार्य था, तो ठीक है, कोई घमंड कर सकता है, लेकिन व्यवस्था का लक्ष्य विश्वास है। और हम इसे यहां देखते हैं और हम इसे बाद में रोमियों में भी देखने जा रहे हैं जहां कानून का लक्ष्य विश्वास और विश्वास के माध्यम से धार्मिकता है।

पॉल के पूरे तर्क में, कानून ईश्वर की धार्मिकता को प्रमाणित करता है, न कि मानवता की, 3:21 से 23 तक। वह कहता है कि वह श्लोक 31 में यह कहने जा रहा है कि विश्वास कानून स्थापित करता है। आस्था कानून को कमजोर नहीं करती।

बल्कि, विश्वास कानून स्थापित करता है। और हम इसके बारे में तब और अधिक बात करेंगे जब हम श्लोक 31 पर पहुंचेंगे। हमारे पास कानून में, तोरा में ही, जैसे मुक्ति और प्रायश्चित के रूप में समानताएं हैं।

पॉल इन्हें 3:24 और 3:25 में मुक्ति और जयजयकार, सन्दूक की दया सीट के साथ संबोधित करता है, जहां प्रायश्चित के दिन, योम किप्पुर पर प्रायश्चित किया जा सकता है। इस प्रकार, हम भगवान पर निर्भर होकर सही हैं, न कि अपनी योग्यता से, 3:28। खैर, कानून के विपरीत दृष्टिकोण का यह विचार, किस कानून के द्वारा हम सही बने हैं? कुछ लोग इसका अनुवाद करते हैं कि हम किस सिद्धांत से सही बने हैं? लेकिन संदर्भ में, नोमोस का अर्थ कानून है और यहां इसका अर्थ बदलने का कोई कारण नहीं है। यह समझ में आता है, विशेष रूप से पॉल के बड़े तर्क में जहां वह रोमनों में कहीं और भाषा का उपयोग करता है।

किस नामो से, किस कानून से? क्या यह शेखी बघारने के नियम, कार्यों के नियम, कानून के दृष्टिकोण से है जिसका संबंध कार्यों और धार्मिकता प्राप्त करने से है? या क्या यह विश्वास के नियम के द्वारा है, कानून के प्रति विश्वास का दृष्टिकोण, ईश्वर के प्रति उचित प्रतिक्रिया जिसके बारे में कानून सिखाता है, उदाहरण के लिए, उत्पत्ति 15:6 में, जो रोमियों 4 का विषय होगा। कानून के विपरीत दृष्टिकोण, अध्याय 8 और पद 2, मसीह यीशु में जीवन की आत्मा के नियम ने आपको पाप और मृत्यु के नियम से मुक्त कर दिया है। जब व्यवस्था हृदयों में आत्मा द्वारा लिखी जाती है, जैसा कि यहजेकेल 36 में, श्लोक 27 में कहा गया है, तो वही चीज़ इसे पाप और मृत्यु की व्यवस्था होने से रोकती है। यह बस इतना है कि हम पर यह फैसला सुनाया जाता है कि हमने परमेश्वर के मानकों का पालन नहीं किया है।

अध्याय 9 श्लोक 31 और 32, अध्याय 10 श्लोक 5 से 8, ये सभी कानून के दो अलग-अलग दृष्टिकोणों के बारे में बात करते हैं। और पॉल जिस दृष्टिकोण की अनुशंसा कर रहा है वह वह दृष्टिकोण है जिसके द्वारा हमें बचाया जा सकता है और केवल निंदा नहीं की जा सकती। मुद्दा यह है कि कानून के बावजूद, यहूदी और अन्यजाति एक ही शर्तों पर परमेश्वर के पास आते हैं, 3:9 और 22।

बस एक ही ईश्वर है। यह 3:30 बजे हैं। वह यहूदी धर्म की आधारशिला है, शेमा। शेमा यिसरेल अडोनाई एलोहिनु अडोनाई एचाड [Deut। 6:4]। यहाँ, हे इस्राएल, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक है। लेकिन पॉल इससे एक धार्मिक निहितार्थ निकालता है। इसका हवाला उन्होंने अन्यत्र दिया है।

यीशु ने इसे मार्क अध्याय 12 में उद्धृत किया है। पॉल ने इसे अन्यत्र उद्धृत किया है, उदाहरण के लिए, 1 कुरिन्थियों अध्याय 8 श्लोक 5 और 6 में, जहां वह इसे परमेश्वर पिता और यीशु के ईश्वरत्व पर लागू करता है। लेकिन वह इसे यहां धार्मिक रूप से लागू करते हुए कहते हैं कि पूरी मानवता के लिए एक ईश्वर होना चाहिए।

वह अकेले इस्राएल का परमेश्वर नहीं है। वह केवल यहूदी लोगों का ही परमेश्वर नहीं है, श्लोक 29 और 30, बल्कि वह सभी लोगों का परमेश्वर है। कई लोगों ने इज़राइल की आत्मा या अंत

समय के उत्कर्ष के लिए ईश्वर की सर्वोच्चता का हवाला दिया, लेकिन पॉल ने इसे पूरी मानवता के लिए ईश्वर की देखभाल पर लागू किया।

तो क्या लिखने का कोई अलग माध्यम है? यहूदी विश्वासयोग्यता से, एक पिस्तेओस, ईश्वर के विश्वास या विश्वासयोग्यता से, अन्यजाति 3:30 में विश्वास या विश्वासयोग्यता से, क्योंकि वह प्रत्येक के लिए एक अलग पूर्वसर्ग का उपयोग करता है। यहूदी एक वफ़ादार होंगे, अन्यजाति एक वफ़ादार होंगे। दरअसल, अलंकार में शैलीगत भिन्नता बहुत महत्वपूर्ण थी और अलंकार में बहुत आम थी।

और शायद यह उसी बात को कहने का एक और तरीका है। व्याख्याकार कभी-कभी इस प्रकार के विवरणों पर मेहनत करते हैं, लेकिन आप अन्य प्राचीन साहित्य पढ़ते हैं। कभी-कभी इन चीजों का उपयोग परस्पर विनिमय के लिए किया जाता था, विशेषकर कोइन ग्रीक में, जो इस काल का ग्रीक था।

संदर्भ यह है कि यहूदी और अन्यजाति दोनों के लिए, यह यीशु का विश्वास होना चाहिए, 3:22, कानून काम नहीं करता, 3:19 से 20 तक। 3:31 पॉल के तर्क में एक धुरी प्रदान करता है। कानून परमेश्वर की धार्मिकता के विश्वास मार्ग का समर्थन करता है, जैसा कि उसने 3:21 और 3:22 में कहा था। और वह इसे कानून से, तोरा से दिखाने जा रहा है, जिसमें उत्पत्ति भी शामिल है जब लोगों ने एक मूलभूत उदाहरण के साथ तोरा के बारे में बात की, अर्थात् अध्याय चार में इब्राहीम का उदाहरण, श्लोक एक से 25 तक।

और हम यहीं पर आगे बढ़ते हैं क्योंकि मूल में कोई अध्याय विराम नहीं था। हालाँकि, अध्याय टूटने के लिए भगवान का शुक्र है, और कविता अब टूट गई है, क्योंकि अन्यथा मैं यह नहीं कह पाऊँगा कि अमुक परिच्छेद की ओर मुड़ें। मुझे बस पॉल और उसके समकालीनों की तरह इसका एक हिस्सा उद्धृत करना होगा और आपसे यह अपेक्षा करनी होगी कि आप जानें कि मैं क्या उद्धृत कर रहा था।

रोमियों अध्याय चार. इब्राहीम विश्वास से सही है. यह मुश्किल है।

अंग्रेजी में ऐसा कोई शब्द नहीं है जिसका उपयोग मैं कर सकता हूँ जो इसकी पूरी अर्थपूर्ण सीमा को दर्शाता है, इसलिए मैं एक तरह से यह कह रहा हूँ कि इब्राहीम को विश्वास के द्वारा भगवान के साथ सही किया गया था, 4:1 से 8 तक। 3:31, विश्वास कानून स्थापित करता है। उन्होंने 3:21 में यह भी बताया जहां कानून और भविष्यवक्ताओं ने विश्वास की गवाही दी। अब वह यहां एक प्रमुख पाठ पर मिडराश करने जा रहे हैं, एक बहुत ही महत्वपूर्ण पाठ जिसे आमतौर पर उद्धृत किया गया था।

अब्राहम एक सामान्य मॉडल हैं. वह दर्शाता है कि यहूदी लोगों के पिता इब्राहीम भी अपने कार्यों पर घमंड नहीं कर सकते थे। 3:27 पर वापस जाएं तो यह अध्याय चार के श्लोक दो में घमंड करने के कारण नहीं है, कि इब्राहीम अपने कार्यों पर घमंड नहीं कर सका।

यहाँ तक कि उसे व्यक्तिगत योग्यता के बजाय विश्वास के द्वारा ईश्वर के समक्ष सही रखा गया था। 3:28, 4:3 से 5 तक। एक परमेश्वर का खतनारहित अन्यजातियों के साथ-साथ खतनारहित यहूदियों के लिए भी एक उद्देश्य था। वह कह रहे हैं कि 3.29 और 3.30। वह उस 4:9 से 12 और 16 से 18 तक वापस आने वाला है।

यह यहां एक प्रमुख मुद्दा है और यह शायद कोई संयोग नहीं है कि इन पत्रों में विशेष रूप से रोमन और गैलाटियन और कुछ हद तक इफिसियों जैसे यहूदी और गैर-यहूदी लोगों से संबंधित है, कि आप विश्वास द्वारा औचित्य पर जोर देंगे। ऐसा नहीं है कि इसका कहीं और कोई महत्व नहीं है, लेकिन यहीं पर यह दिखाने के लिए विशेष जोर दिया जाता है कि अन्यजातियों की भी पहुंच है। अब्राहम एक प्रमुख नैतिक मॉडल है।

4:1 के अनुसार वह इस्राएल का निर्णायक पूर्वज था। बाद में रब्बियों ने कभी-कभी पूर्वजों की खूबियों के बारे में बात की। इस अवधि में उन शर्तों पर कुछ विचार किया गया होगा।

आपके पास उनमें से कुछ मेकिल्टा में हैं, रब्बी इश्माएल का मेकिल्टा, एक्सोडस पर मेकिल्टा जहां इस बात पर बहस होती है कि किसके गुणों के आधार पर समुद्र इज़राइल के लिए अलग हो गया। लेकिन संभवतः इस अवधि में वे इतने सटीक शब्दों में नहीं सोच रहे थे। लेकिन इब्राहीम इज़राइल के लिए भी एक आदर्श था।

बाद में रब्बियों ने उन्हें आदर्श गैर-यहूदी धर्मान्तरित व्यक्ति के रूप में चित्रित किया। तो, अगर पॉल गैर-यहूदियों को लिख रहा है, तो, यहाँ वह है जिसके बारे में आपको बताया गया है कि शायद यह गैर-यहूदियों के लिए आदर्श रूपांतरण है। अन्यजातियों के मॉडल गवाह में, बहुत सारे रब्बीनिक हग्गादाह, रब्बीनिक कहानियाँ।

मुझे ये कहानियाँ बहुत पसंद हैं लेकिन इब्राहीम और सारा के बारे में बात करता हूँ कि वे कैसे रहते थे, इसलिए वे अन्यजातियों के आदर्श गवाह थे। और सारा इन सब राष्ट्रों आदि के बच्चों को पाल रही थी। कई लोगों ने अब्राहम के कार्यों के मॉडल की अपील की, जिसमें उनका विश्वास भी शामिल था, जिसे उनके कार्यों में से एक माना जाता था।

लेकिन विश्वास इब्राहीम की आज्ञाकारिता की नींव था। उत्पत्ति 15:6, विश्वास करने पर वह धर्म गिना गया। और फिर भी इब्राहीम का यह बचाने वाला विश्वास काफी प्राथमिक है क्योंकि यह काफी अपूर्ण था।

मेरा मतलब है, उत्पत्ति अध्याय 12 में, भगवान ने इब्राहीम से वादा किया था कि उसके पास वह भूमि होगी जो भगवान उसे दिखाएगा। और साथ ही, उसके वंशज भी होंगे क्योंकि, उसके वंशजों में, राष्ट्र उसमें धन्य होंगे। तो, इसे अब्राहम के अपने जीवन से आगे जाना होगा।

अध्याय 11 में बैबेल की मीनार के विपरीत जहाँ वे अपना नाम बनाना चाहते थे, परमेश्वर उससे एक महान राष्ट्र बनाएगा। अध्याय 12 में, परमेश्वर इब्राहीम के लिए एक महान नाम बनाएगा। खैर, अब अध्याय 15, इब्राहीम भगवान से शिकायत कर रहा है, मेरे पास कोई वंशज नहीं है।

भगवान ने उससे वादा किया है कि उसके वंशज सितारों की तरह होंगे। इब्राहीम उस पर विश्वास करता है और यह उसे धार्मिकता में गिना जाता है। खैर, इब्राहीम अगले वचन में क्या करता है? वह कहने लगता है, ठीक है, नहीं भगवान, वह बीज की देखभाल करता है।

उस भूमि के बारे में क्या जिसका आपने पहले उल्लेख किया था? इसलिए, परमेश्वर ने इब्राहीम से उस वादे की पुष्टि की। और अगले ही अध्याय में वह क्या करता है? इसका मतलब यह नहीं है कि यह उसके जीवन में घटी अगली चीज़ है, बल्कि अगली चीज़ है जिसे जेनेसिस ने बताना चुना है। अगले अध्याय में, सारा हागर को एक प्रकार की सरोगेट माँ के रूप में प्रस्तावित करती है।

खैर, उन्हें ज्यादा दोष नहीं दे सकते क्योंकि भगवान ने अभी तक स्पष्ट रूप से नहीं कहा था कि यह सारा के माध्यम से हुआ था। लेकिन किसी भी मामले में, वे सांस्कृतिक पद्धति का पालन कर रहे हैं। भगवान इश्माएल को भी आशीर्वाद देने वाले हैं।

परन्तु इस खण्ड में उनकी आस्था अत्यन्त अपूर्ण है। जब आप उत्पत्ति 22 तक पहुँचते हैं तो यह काफी अलग होता है। इब्राहीम वर्षों से भगवान के साथ चल रहा है।

इब्राहीम परमेश्वर की विश्वासयोग्यता को जानता है। इब्राहीम जानता है कि परमेश्वर ने कहा है कि इसहाक में तुम्हारा वंश होगा। मुझे लगता है कि इसके कुछ कारण हैं कि वह युवक से क्यों कहता है, मैं और वह लड़का तुम्हारे पास लौटेंगे।

या वह इसहाक से कहता है, होमबलि के लिये भूमि परमेश्वर आप ही देगा। जैसा कि इब्रानियों 11 कहता है, उसका मानना था कि यदि ऐसा हुआ, तो परमेश्वर उसके बेटे को मृतकों में से जीवित कर सकता है। यह यीशु के साथ एक अच्छी समानता बनाना है।

लेकिन मुद्दा यह है कि, जब तक आप उत्पत्ति 22 तक पहुँचते हैं, तब तक उसका विश्वास वास्तव में मजबूत हो चुका था क्योंकि उसने ईश्वर की वफादारी देखी थी और इसलिए, वह उस तरह की चीज़ के लिए तैयार था। लेकिन यह यहाँ प्राथमिक विश्वास है, उत्पत्ति 15:6। यह इन सभी वर्षों से पहले है, लेकिन जहाँ भगवान ने उसे जाने के लिए कहा था वहाँ जाकर उसने पहले ही विश्वास दिखाया है। तो, विश्वास आज्ञाकारिता में व्यक्त किया गया था।

लेकिन बचाने वाला विश्वास, अभी उत्पत्ति 22 विश्वास जैसा नहीं होना चाहिए। हम विकसित हुए। हमें बढ़ना चाहिए।

लेकिन उत्पत्ति 15.6 बुनियादी विश्वास, बचाने वाला विश्वास है, और यही उसके पास है। और यह कानून के कार्यों, धार्मिकता के विपरीत है। कानून काम करता है।

एक धर्म परिवर्तन करने वाला एक मांग के रूप में क्या अनुभव कर सकता है। खैर, आपको यह, यह, और यह करना होगा। एक यहूदी व्यक्ति के लिए, यदि आप इसके साथ बड़े हुए हैं, तो यह आपकी संस्कृति हो सकती है और बहुत सी चीज़ें सामान्य हैं।



लेकिन एक गैर-यहूदी धर्मांतरित व्यक्ति के लिए, आपको बहुत सारे बदलाव करने होंगे। ठीक है, अब्राम को धार्मिक कार्यों के कारण धार्मिकता का श्रेय नहीं दिया गया, ऐसा श्लोक 4 और 5 में कहा गया है। यह कुछ ऐसा नहीं है जो उसने अर्जित किया हो। ये उनकी मजदूरी नहीं थीं।

यदि आप जानना चाहते हैं कि मजदूरी क्या है, तो अध्याय 6 और श्लोक 23 पाप की मजदूरी के बारे में बात करते हैं। लेकिन इसके बजाय, पॉल ग्रीक में रेकन्स या अकाउंट्स, लॉजिज़ोमाई शब्द पर जोर देता है। यह बहीखाता-प्रकार का शब्द है।

यह एक लेखांकन शब्द है। यदि आप एक अकाउंटेंट हैं, तो आप इस पर मुस्कुरा सकते हैं, लेकिन भगवान ने इब्राहीम के खाते को धार्मिकता माना। उसने उसे धार्मिकता का श्रेय दिया।

और इस श्रेय शब्द का प्रयोग अध्याय 4 में 11 बार किया गया है। यह कुछ ऐसा है जो भगवान ने किया है। पद 5 में, पॉल जानबूझकर उत्तेजक भाषा का उपयोग करता है जब वह कहता है, भगवान दोषियों को बरी कर देता है। निर्गमन 23 और श्लोक 7, आपको कभी भी दोषियों को बरी नहीं करना चाहिए, लेकिन भगवान दोषियों को बरी कर देते हैं।

वह कैसे जानता है? वह डेविड को भजनहार, गवाह के रूप में उद्धृत करता है। माना जाता है कि डेविड कई भजनों के लेखक थे, खासकर जहां उपरिलेख ऐसा कहता है। इसलिए, वह डेविड को एक गवाह के रूप में उद्धृत करता है और वह गेज़र हाशवा का उपयोग करता है, जो छंद 4, 6 से 8 में ग्रंथों को एक साथ जोड़ता है। भगवान ने इब्राहीम के खाते को धार्मिकता माना।

भजन 32, वह क्या ही धन्य है, जिसके अधर्म का हिसाब न किया जाएगा, और जिसके काम क्षमा किए गए हैं। भजन 32, 1 और 2। श्लोक 3 के संदर्भ में भजनहार ने स्पष्ट रूप से पाप किया था, लेकिन भजनकार को क्षमा कर दिया गया है। तो, ठीक है, वह हिसाब हमारे लिए कैसे हो सकता है? इब्राहीम के मॉडल का पालन करें, विश्वास से, ईश्वर के वादे पर भरोसा करते हुए, जो अंततः ईश्वर के पुत्र, मसीहाई पुत्र के वादे की ओर ले जाता है।

इब्राहीम न केवल जातीय रूप से यहूदी लोगों का पिता है, रोमियों 4:1, बल्कि वह विश्वास करने वाले अन्यजातियों का भी पिता है। ईश्वर यहूदियों और अन्यजातियों दोनों को एक ही माध्यम से लिखता है। इब्राहीम आदर्श गैर-यहूदी धर्मांतरित था, इसलिए हम यहां उसके उदाहरण का अनुसरण कर सकते हैं।

संदर्भ भी एक प्राचीन व्याख्यात्मक तकनीक थी। हम इससे खुश हो सकते हैं क्योंकि यह एक अच्छी व्याख्यात्मक तकनीक है। उत्पत्ति 15:6 खतना से 13 वर्ष पहले हुआ था।

तो, यह 16.4 में इश्माएल के गर्भाधान से पहले हुआ था और उत्पत्ति के 17:25 में 13 साल की उम्र में इश्माएल का खतना किया गया था। तो, कोई आपत्ति उठा सकता है, ठीक है, आप जानते हैं, इब्राहीम विश्वास से न्यायसंगत है, लेकिन वाचा का हिस्सा बनने के लिए, आपको खतना करना होगा। और वह औचित्य होगा।

पॉल कहते हैं, नहीं, यह इब्राहीम और इश्माएल के खतना से कम से कम 13 साल पहले हुआ था। वह इस आशीर्वाद की बात करते हैं। श्लोक नौ में इस आशीर्वाद से उसका क्या तात्पर्य है? भला, वह व्यक्ति क्या ही धन्य है जिसके पाप क्षमा किए गए हैं? अध्याय चार, छंद छह से आठ तक वापस जा रहे हैं।

जातीय बनाम आध्यात्मिक वंश. रब्बियों ने कहा कि पैतृक, कम से कम बाद में रब्बियों ने कहा कि पैतृक योग्यता थी, आप आशीर्वाद के लिए पैतृक योग्यता प्राप्त कर सकते हैं। तुम्हारे पूर्वजों ने अच्छा किया।

आपको उस योग्यता का कुछ हिस्सा मिलता है, लेकिन वह धर्म परिवर्तन करने वालों के लिए उपलब्ध नहीं है। लेकिन पॉल इब्राहीम के बारे में उस तरह से बात नहीं कर रहा है। वह अब्राहम को केवल एक मॉडल के रूप में उपयोग कर रहा है।

लोग अक्सर आध्यात्मिक पूर्वजों के बारे में बात करते थे। ये वे लोग थे जिनकी तरह आपने व्यवहार किया, जिन लोगों की आपने माता-पिता की तरह नकल की। पौलुस श्लोक 11 और 12 में कहता है, इब्राहीम के आध्यात्मिक उत्तराधिकारी केवल खतना की बाहरी मुहर से अधिक विश्वास से हैं।

बाद के कुछ रब्बियों ने खतने को एक मुहर के रूप में बताया, जैसा कि पॉल यहां टोसेफ्टा में करता है बाराकोट। बरनबास की पत्री में भी आपके पास कुछ ऐसा ही है। परन्तु खतना एक वाचा का चिन्ह था, उत्पत्ति 17:11। कुछ लोग सोचते हैं कि पॉल यहाँ खतना के स्थान पर बपतिस्मा लेता है, लेकिन पॉल यहाँ बपतिस्मा का उल्लेख नहीं करता है।

इसमें सिर्फ आस्था का जिक्र है. आत्मा की मुहर, कुछ लोग 2 कुरिन्थियों 1:22 पर जाते हैं और कहते हैं कि आत्मा की मुहर, बपतिस्मा होना चाहिए, लेकिन इसमें बपतिस्मा का उल्लेख नहीं है। आपके पास हरमास में दूसरी शताब्दी का कोई संबंध है, लेकिन मुझे नहीं लगता कि हमें इसे यहां वापस पढ़ना चाहिए।

तो, आप इसे चर्चा से बाहर ही छोड़ दें। लेकिन वह विश्वास की बात करते हैं। वह अध्याय छह में बपतिस्मा के बारे में बात करेगा, लेकिन हमें उसके लिए वहां पहुंचने तक इंतजार करना चाहिए।

संभावित आपत्ति जो उठाई जा सकती है. ठीक है, धर्मी व्यक्ति ईश्वर से डरने वाला हो सकता है, लेकिन धर्म परिवर्तन करने वाले के लिए, आपको खतना कराना होगा। और यह उत्पत्ति 17.10-14 के आधार पर समझ में आता है। वास्तव में, एक युवा ईसाई के रूप में एक समय था जब मैं इसे देख रहा था और सोच रहा था, हम्म, मुझे नहीं पता कि पॉल ने इसकी सही व्याख्या की है या नहीं।

और अगर मैं पॉल के तर्क में या पॉल के तर्क की तरह काम करने वाली किसी चीज़ का अर्थ नहीं समझ पा रहा हूँ, तो मुझे रूढ़िवादी यहूदी धर्म में परिवर्तित होना होगा। और मैं अपने विश्वास में सबसे अच्छी बात यह रख सकता हूँ कि वह एक ईश्वर और यीशु हैं, लेकिन मुझे टोरा का पालन

करना होगा। खैर, पॉल का कहना है कि भूमि का वादा भी अब्राहम को तब दिया गया था जब वह खतनारहित था।

और वह व्यवस्था से सदियों पहले की बात है, रोमियों 4:13। वैसे, मुझे अपनी बात पूरी करनी चाहिए जो मैंने कहा था कि मैं व्यवस्थाविवरण पढ़ रहा था और मैंने अभी देखा कि कैसे मुक्ति अनुग्रह से होती है और कानून को अपने हृदय में रखने की आवश्यकता होती है इत्यादि। और फिर उसके और पॉल के बीच आगे-पीछे होते हुए, मुझे यकीन हो गया कि पॉल वास्तव में कानून के मर्म को सही समझता है और पॉल का संदेश सही है। और वास्तव में, मैंने एक रब्बी को इस पर व्याख्या करते हुए सुना और पॉल ने रब्बी की आपत्ति का उत्तर दिया।

रब्बी को नहीं पता था कि पॉल ने उसकी आपत्ति का उत्तर दे दिया है। लेकिन किसी भी मामले में, खतना, वह कहता है, श्लोक 11, केवल उसके विश्वास का बाहरी संकेत या मुहर है, 4:11, लेकिन यह आध्यात्मिक खतना के लिए स्वाभाविक रूप से आवश्यक नहीं है, 2:25 से 29 तक आत्मा का उपहार .मुहर की भाषा, जब वह इसे एक मुहर के रूप में बोलता है, तो यह खतना, एक मुहर को एक प्रतीक के रूप में इस्तेमाल किया जा सकता है।

निर्गमन 28:11, 21, और 36 में इसका उपयोग इसी प्रकार किया गया है। वाचा का चिह्न, ठीक है, इंद्रधनुष उत्पत्ति 9:12, 13, 16, और 17 में वाचा का चिह्न था। लेकिन वाचा के चिह्न के रूप में वाचा, इंद्रधनुष स्वयं मुक्ति नहीं था।

यह इसकी याद दिलाने वाला था. खतना स्वयं वाचा नहीं थी। यह वाचा का चिह्न था.

लेकिन अगर भगवान इसके बिना दिल को स्वीकार करते हैं, जैसा कि पॉल का तर्क है, हमारे पास विश्वास के माध्यम से वादा है, श्लोक 13 से 25। भगवान की प्रतिज्ञा की मूल योजना इज़राइल-विशिष्ट कानून के विपरीत है। परमेश्वर की मूल योजना उससे कहीं अधिक व्यापक थी।

पॉल का तर्क है कि रोमियों 4 और गलातियों 3 में। चार्ल्स टैलबर्ट, जिन्होंने रोमियों पर एक बहुत अच्छी लघु टिप्पणी भी लिखी थी, नोट करते हैं कि विभिन्न यहूदी विचारकों ने बाइबिल की कुछ वाचाओं पर प्रकाश डाला, जबकि अन्य को कम महत्व दिया। यहां पॉल का उपचार अब अनोखा नहीं रह गया है। वह उस वाचा पर प्रकाश डाल रहा है जो उसके तर्क के लिए सबसे अधिक प्रासंगिक है, और वह अब्राहम के साथ की गई वाचा है।

यहां की जमीन, जमीन का वादा. हिब्रू में, इरेत्ज़ , भूमि या तो स्थानीय रूप से भूमि को संदर्भित कर सकती है, या यह दुनिया, पूरी भूमि को संदर्भित कर सकती है। और पॉल के दिनों तक, आम तौर पर भूमि को विरासत में देने का वादा पूरी दुनिया पर लागू किया गया था, या आने वाली दुनिया को विरासत में दिया गया था।

इसलिए, पॉल को यहां तर्क देने के बारे में चिंता करने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि यह पहले से ही व्यापक रूप से स्वीकार किया गया था। विरासत की भाषा का प्रयोग अक्सर आने वाले युग के जीवन के मुहावरों में किया जाता है। रोमियों 8:17, इस बारे में बात करते हुए कि हम मसीह के साथ विरासत में मिलेंगे।

1 कुरिन्थियों 6:9-10, वे राज्य के वारिस होंगे। 15.50, राज्य का उत्तराधिकारी क्या होगा? 5:21 यदि ये सब पाप करें, तो ये राज्य के अधिकारी न होंगे।

इसलिए, विरासत की भाषा का प्रयोग अक्सर इसी तरह किया जाता था। वैसे, यह सिर्फ पॉल ही नहीं है, यह यहूदी साहित्य में अन्यत्र भी है। आने वाली दुनिया को विरासत में लेना, आने वाले यहूदी लोगों की भाषा को उद्घाटित करना, और जब वे कनान देश में आएंगे तो भूमि को विरासत में लेना।

पॉल का कहना है कि विश्वास कानून को रद्द नहीं करता है। उन्होंने यह बात 3:31 में कही। और वह कहता है कि कानून विश्वास और पहले दिए गए वादे को रद्द नहीं कर सकता, 4:14. यहां कानून का कार्य, यह कहना नहीं है कि यह कानून का एकमात्र कार्य है, बल्कि 4:15 में वह कहता है कि कानून का कार्य विफलताओं को प्रकट करना है, न कि धार्मिकता की गणना करना। यह एक मानक है क्योंकि हम इसे इस तरह से व्यवहार कर रहे हैं, न कि यह हमारे दिल में लिखा एक उपहार है।

यह एक मानक है और जब हम कम रह जाते हैं तो यह हमें बता देता है। यह न केवल कानून के लोगों के लिए है, बल्कि विश्वास के लोगों के लिए भी है, अन्यजातियों के लिए, 4:16। यह शब्द जातीय रूप से यहूदी लोगों के लिए एक सतत योजना की अनुमति दे सकता है, जिसे अध्याय 11 में विकसित किया गया है, लेकिन वह इब्राहीम में सभी राष्ट्रों के आशीर्वाद का हवाला नहीं देता है, जैसा कि वह गलातियों 3.8 में करता है, जो अक्सर उत्पत्ति, उत्पत्ति 12 में दिखाई देता है: 3, 18:18, और 22:18. लेकिन वह यहाँ रोमियों 4:17 में उत्पत्ति 17 श्लोक चार से छह तक का हवाला देता है। इब्राहीम कई राष्ट्रों का पिता है। खैर, उत्पत्ति में, वह कौन हो सकता है? वह मिद्यानी, मिद्यानी और अन्य जातीय वंशज होंगे।

हालाँकि, कुछ यहूदी परंपराओं ने कहा कि यह दुनिया थी। लेकिन सभी भौतिक वंशजों को वाचा विरासत में नहीं मिलती। यह उत्पत्ति 17:7 और 8 में स्पष्ट है। पॉल ने इसे रोमियों 9:6 से 13 और 25 से 29 में विकसित किया है।

तो, वह इब्राहीम पर जोर दे रहा है। कई राष्ट्रों का पिता होने के नाते वे वास्तव में किसी बड़ी चीज़ की आशा रखते थे। यदि हम इसे सिर्फ यहूदी लोगों के रूप में लेते हैं, तो यहूदी लोगों की संख्या को स्वर्ग के सितारों के रूप में नहीं देखा जा सकता है, जैसे कि इसमें वे सभी शामिल हैं जो इज़राइल के राजा, यीशु के माध्यम से एक सच्चे ईश्वर के पास आते हैं। .

एनटी राइट के इस अनुच्छेद और इससे पहले रोमियों 1 में कही गई बातों के बीच कई विरोधाभास हैं। यह हमें अध्याय 5 में एडम भाषा के लिए तैयार करेगा। मानवता अपने निर्माता को पहचानने में विफल रही। इब्राहीम ने सृष्टिकर्ता पर भरोसा किया। मानवता ने ईश्वर की शक्ति को नजरअंदाज कर दिया।

इब्राहीम को परमेश्वर की शक्ति पर भरोसा था। अध्याय 1 में मानवता ने ईश्वर की महिमा नहीं की। इब्राहीम ने ईश्वर की महिमा की। मानवता ने उनके शरीर का अपमान किया।

इब्राहीम को अपने शरीर में नई ताकत मिली। मानवता ने अपने शरीर का उपयोग अनुत्पादक समलैंगिक संबंधों में किया। इब्राहीम और सारा ने एक बच्चे को जन्म दिया जो चमत्कारिक ढंग से फलदायी और बहुगुणित हुआ।

इसके अलावा, हम इब्राहीम की तुलना पौलुस द्वारा विश्वासियों के बारे में कही गई बातों से कर सकते हैं क्योंकि उसका दृष्टिकोण यही है। वह इसे विश्वासियों पर लागू करने जा रहा है। इब्राहीम ईश्वर पर विश्वास करता था जो मृतकों को जीवित करता है, रचनात्मक रूप से चीजों को अस्तित्व में लाता है, 4.17। खैर, पुनरुत्थान विश्वास बाद के विश्वासियों के लिए वफादार है, 4.19 और 4.24। जिसे वह सारा के गर्भ की मृत्यु कहते हैं, उस पर विजय पाने वाला विश्वास, 4.19, पुनरुत्थान विश्वास भी है, 4.17। इब्राहीम ने स्थिति की निराशा के बावजूद आशा बनाए रखी, श्लोक 18, जैसा कि विश्वासियों को अध्याय 5 और 8 में करना चाहिए। इब्राहीम विश्वास में मजबूत था, 4.19 और 4.20। खैर, कुछ आस्तिक आस्था में कमजोर होते हैं, इसलिए हमें उनसे सीखने की ज़रूरत है।

इब्राहीम पूरी तरह से आश्वस्त था, और अध्याय 14 में पॉल ने विश्वासियों के लिए उस भाषा का इस्तेमाल किया, कि हमें पूरी तरह से आश्वस्त होना चाहिए। इब्राहीम ने संदेह करने से इनकार कर दिया, डायक्रिनो, और 14:23 में विश्वासियों को डायक्रिन से इनकार करना चाहिए। इसकी शब्दार्थ सीमा अंग्रेजी की तुलना में थोड़ी अधिक व्यापक है।

तो, एक मामले में इसका मतलब संदेह करना है, दूसरे मामले में, इसका मतलब कुछ अलग है, लेकिन यह एक ही शब्द है और इसका वहां एक जुड़ाव है। इब्राहीम ने अविश्वास, धर्मत्याग से परहेज किया। खैर, पॉल समकालीन इज़राइल के अधिकांश लोगों के अविश्वास पर ध्यान देता है और वह इसे विश्वासियों के लिए एक अंतर्निहित चेतावनी के रूप में नोट करता है, ऐसा न हो कि आप अविश्वास के कारण काट दिए जाएं।

इब्राहीम ने वादा पूरा होने से पहले परमेश्वर की महिमा की। कुछ लोगों ने परमेश्वर की महिमा करने से इनकार कर दिया, यह विशेष रूप से 1:21 में अन्यजातियों के बारे में बात कर रहा है, उसके कार्यों के बाद भी। विश्वासियों को उसकी दया के लिए परमेश्वर की महिमा करनी चाहिए, 15:6 और 9। इब्राहीम के लिए विश्वास को धार्मिकता माना गया था।

यह विश्वासियों के लिए एक आदर्श है। यहाँ, इब्राहीम के विश्वास में, हमारे विश्वास के उद्देश्य को देखते हुए, यह वादा है। वह 4:20 और 4:21 में वादे के बारे में बात करता है। इसके अलावा, उन्होंने 4:13 और 4:14 और 4:16 में इसके बारे में बात की। पौलुस ने पहले 1:2-4 में प्रतिज्ञा की इस भाषा का उपयोग मसीहा, दाऊद के पुत्र, परमेश्वर के पुत्र, के लिए किया था, जिसकी प्रतिज्ञा भविष्यवक्ताओं में की गई थी।

दुनिया को विरासत में लेना, 4:13, राज्य का पूर्वाभास देता है, जो जीवन में राज करेंगे, 5:17, और डैनियल 7:14-22 की भाषा। वादा किए गए बीज का पूर्वाभास एक अधिक विशिष्ट बीज द्वारा किया जा सकता है। पॉल गलातियों 3:16 में यह तर्क देने जा रहा है। वह इसहाक को प्रतिज्ञा की

संतान के रूप में बोलने जा रहा है, अध्याय 9 और पद 8। लेकिन उसके वंश में एक बाद की प्रतिज्ञा भी शामिल है, जैसे दाऊद के वंश के साथ प्रकट हुई प्रतिज्ञाएँ, रोमियों 1:3, 2 शमूएल 7:12 को देखते हुए, जो संदर्भ में एक मसीहा का जिक्र नहीं कर रहा है, यह डेविड की पंक्ति का जिक्र कर रहा है। लेकिन अंततः, यह वादा प्रकट होता रहता है क्योंकि भविष्यवक्ता दाऊद के घराने के इस व्यक्ति के बारे में बात करते हैं जो यशायाह 9, वादा किए गए बीज और पुनरुत्थान में 4:24 के लिए एक मॉडल के रूप में शासन करने जा रहा है। इसलिए, वह इसके अनुप्रयोग के लिए चीजें तैयार कर रहा है।

4:23 और 4:24 में, हमारे पास इसके चरमोत्कर्ष में विश्वासियों के लिए आवेदन है। ये घटनाएँ उन लोगों के लिए घटित हुईं जो इसमें शामिल थे, लेकिन इन्हें हमारे सीखने के लिए लिखा गया था। पॉल का कहना है कि अध्याय 15 में श्लोक चार में, वह 1 कुरिन्थियों 10:11 में जंगल में इस्राएल की अवज्ञा के बारे में बात करता है।

ये चीजें हमारे लिए उदाहरण हैं इसलिए हमें वह नहीं करना चाहिए जो उन्होंने किया।' श्लोक 25 में अध्याय चार में, पॉल सारांशित करता है, और वह आमतौर पर अभियोगात्मक साधनों के साथ समानांतर खंडों का उपयोग करता है, लेकिन वह इन समानांतर खंडों का उपयोग केवल अलंकारिक प्रभाव के लिए करता है। पहला खंड एक कारण है जिसके लिए यीशु की मृत्यु की आवश्यकता है।

दूसरा पुनरुत्थान का लक्ष्य या अंतिम दूरसंचार कारण है। भगवान यीशु की मृत्यु के कारण विश्वासियों को लिखते हैं, 4.25, और उनके पुनरुत्थान के कारण, अध्याय पांच श्लोक नौ में। ऐसे विभिन्न पहलू हैं जिन पर पॉल अलंकारिक संतुलन के लिए अलग-अलग बिंदुओं पर जोर देता है।

4:24 और 4:25 यशायाह 53 छंद पांच से 12 की ओर इशारा कर सकते हैं। और मैं इसके बारे में बस एक संक्षिप्त टिप्पणी करूंगा। यशायाह 42 से 49 तक, आपके पास ये अंश स्पष्ट रूप से इज़राइल को भगवान के सेवक के रूप में संदर्भित करते हैं।

यशायाह 42 आयत 18 और 19, वह तो मेरा दास होकर अन्धा है, वा मेरे भेजे हुए दूत के समान बहरा है। इज़राइल ईश्वर का सेवक था, लेकिन सभी इज़राइल ने हमेशा मिशन को पूरा नहीं किया। और इस्राइल को उसके पापों के लिए दंडित किया जा रहा है।

और इसलिए, परमेश्वर इस्राएल के लिए कष्ट सहने के लिए इस्राएल के भीतर एक व्यक्ति को खड़ा करता है। और यह आपके पास यशायाह अध्याय 49 में है, जहां कोई इस्राएल के लिए कष्ट उठाता है। और फिर, श्लोक 12 में 52:13 से 53 तक, जहां कोई इस्राएल की ओर से कष्ट उठाता है।

आप इसे शायद धर्मी अवशेष के रूप में देख सकते हैं, या शायद अंततः, पूर्वव्यापी रूप से, हम इसे यीशु द्वारा पूरा किए गए के रूप में देख सकते हैं। और फिर यीशु के अनुयायियों को भी राष्ट्रों के लिए प्रकाश होना चाहिए। हमें नौकर के मिशन को उसी तरह से पूरा करना चाहिए।

परन्तु जो इस्राएल की ओर से कष्ट सहता है, वह कहता है, कि उस ने कुछ भी गलत नहीं किया। इज़राइल अध्याय 40 में, उन्हें उनके पापों के लिए दोगुना दंड दिया जा रहा है। परन्तु अध्याय 53 में उसके मुँह से कोई अधर्म नहीं निकला और वह अपनी प्रजा के लिये कष्ट उठाता है।

और वास्तव में 52.13 से 15 में, आप कई देशों इत्यादि को छिड़क देंगे। लेकिन फिर भी, इस परिच्छेद में हमारे पास निम्नलिखित तर्क के लिंक हैं। पैराटोमा शब्द, अपराध जो हमारे यहां है, अगले अध्याय 5:15 से 20 में इसके छह उपयोगों के लिए तैयार करता है।

डिकाइओसिस या बरी करना 5.18 के लिए तैयार करता है, जहां यह पैराटोमा के विपरीत है, अपराध का विरोध करता है। हमने ईश्वर से बरी कर दिया है। निम्नलिखित इकाई, 5:1 से 11, लेकिन फिर उससे आगे बढ़ते हुए, निम्नलिखित इकाई पाप के कारण यीशु की मृत्यु के अर्थ को उजागर करती है।

:9 में यीशु की मृत्यु के माध्यम से परमेश्वर के क्रोध को दूर करना। 5:18 और 19 में, यीशु की पूर्ण आज्ञाकारिता, यहाँ तक कि मृत्यु के बिंदु तक, आदम की अवज्ञा को उलट देती है। खैर, हमें मसीह द्वारा सही किया गया है और मेल-मिलाप कराया गया है।

अध्याय पाँच, श्लोक एक से 11 तक। यहाँ, पॉल अध्याय चार से अब्राहम के उदाहरण को लागू करना जारी रखता है। इसीलिए शुरुआत में आपके पास 5.1 में है। विश्वासियों को विश्वास के द्वारा सही किया गया है।

वह 4.25 में पहले ही ऐसा कह चुके हैं और उन लोगों के बारे में बात कर चुके हैं जो 4.24 में विश्वास करते हैं। खैर, अब वह कहते हैं कि ईश्वर के साथ हमारी शांति है। अब इसका एक पाठ्य संस्करण है। इस बात पर बहस चल रही है कि क्या इसका मतलब यह है कि हम ईश्वर के साथ शांति रखें या हमें ईश्वर के साथ शांति रखने दें।

लेकिन इस संदर्भ में, इसकी अधिक संभावना है कि यह कह रहा है कि हमारी ईश्वर के साथ शांति है। यह कुछ ऐसा है जिसे भगवान ने पहले ही पूरा कर दिया है। हम अब दुश्मन नहीं हैं, अध्याय पांच और श्लोक 10।

पद 10 और 11 में हमारा उसके साथ मेल हो गया है। इसलिए अब हम परमेश्वर के साथ शत्रुता में नहीं हैं। अब हमें ईश्वर के साथ शांति प्राप्त है।

यह 4.25 में यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान के माध्यम से पूरा हुआ। अध्याय पांच और श्लोक दो. यीशु ने विश्वासियों को विश्वास के द्वारा अनुग्रह में प्रवेश कराया है, और हमें वह अनुग्रह प्रदान किया है जिसमें हम खड़े हैं। अनुग्रह और विश्वास उन चीज़ों को प्रतिध्वनित करते हैं जो वह हमेशा से कहते रहे हैं, 3:22, 3:24, 4:3, और 4:16। मुझे पता है कि मैं सभी श्लोक संख्याएं दोहराता हुआ लग रहा हूँ, लेकिन मैं जो करने की कोशिश कर रहा हूँ वह सिर्फ आपको यह दिखाने के लिए है कि तर्क कितना निकटता से जुड़ा हुआ है।

पॉल वास्तव में इस मामले में प्रतिभाशाली है कि वह इन चीजों को एक साथ कैसे जोड़ता है और उसका दिमाग पवित्रशास्त्र के साथ कैसे काम करता है। खैर, यीशु के माध्यम से, हमारे पास यह अनुग्रह है जिसमें हम अब खड़े हैं। क्रिया काल के बारे में फिर से कुछ बहस चल रही है, लेकिन हम समझ सकते हैं कि इसके सही काल का मतलब है कि हम भगवान की कृपा में बने रहते हैं।

11:20 और 14:4 में गिरने के विपरीत, हमें यह नहीं सोचना चाहिए कि हम अनुग्रह की स्थिति के अंदर और बाहर जा रहे हैं। जैसे, ओह, मुझे छींक आ गई। ओह, मुझे आशा है कि मैं अनुग्रह से बाहर नहीं हुआ हूँ।

पॉल कभी-कभी अनुग्रह से बाहर होने की बात करता है। मेरा मतलब है, वह दृढ़ता की आवश्यकता की बात करता है। गलातियों अध्याय पाँच और पद चार।

आप अनुग्रह से गिर गए हैं। तुम्हें मसीह से अलग कर दिया गया है। आप कानून द्वारा न्यायसंगत होना चाहते हैं।

हम उनमें से कुछ को रोमियों 11:22 इत्यादि में देखेंगे। लेकिन ऐसा नहीं है कि हम कमज़ोर स्थिति में हैं। हमने ईसा मसीह पर विश्वास किया है।

हमें मसीह में बपतिस्मा दिया गया है। पवित्र आत्मा हममें रहता है। हम पवित्र आत्मा के लिए एक मंदिर हैं।

इसलिए जब तक हम मसीह से विमुख नहीं होते, हम मसीह में हैं। दुर्भाग्य से, कुछ लोग मुँह मोड़ लेते हैं। और क्या कैल्विनवादी दृष्टिकोण के अनुसार, शुरुआत में उन्हें बचाया नहीं गया था, या क्या उन्हें बचाया गया था और वे एनोमिनियन दृष्टिकोण के अनुसार दूर चले गए, हमें इस बिंदु पर निपटना होगा।

हालाँकि मैं कह सकता हूँ कि यह संभवतः इस बात पर निर्भर करता है कि आप किस पाठ को देख रहे हैं, क्योंकि कुछ पाठ इसे ईश्वर के शाश्वत दृष्टिकोण से देखते हैं, और कुछ पाठ इसे मानवीय अनुभव के दृष्टिकोण से देखते हैं। और मुझे लगता है कि वास्तव में दोनों सही हो सकते हैं। हमें बस यह पता लगाने की जरूरत है कि हम किस दृष्टिकोण से देख रहे हैं, लेकिन जैसा भी हो।

शेखी बघारना। ठीक है, आपको 2:17 और 23 में भगवान, कौकुमाई, भगवान, या कानून में झूठा घमंड मिला है। लेकिन अध्याय पांच और पद दो में, यीशु में, विश्वासी आशा में घमंड कर सकते हैं।

और हम भी अपने कष्टों पर घमण्ड करते हैं, आनन्दपूर्वक अपने कष्टों पर घमण्ड करते हैं, 5:3-5. अंततः, वह इसे अध्याय पाँच और श्लोक 11 में संक्षेप में प्रस्तुत करने जा रहा है, हम ईश्वर पर गर्व करते हैं। इन तीनों मामलों में यह एक ही ग्रीक शब्द है, हालाँकि सभी अनुवादकों द्वारा इसका अनुवाद हमेशा एक ही तरह से नहीं किया जाता है। पता नहीं क्यों।



आशा शब्द . आशा और पीड़ा के माध्यम से पूर्ण होने की आशा पर घमंड करने का क्या मतलब है? खैर, यीशु में, पीड़ा आशा की ओर ले जाती है। और यह उस उदाहरण का अनुसरण करता है कि उसने अभी 4.18 में इब्राहीम के पुनरुत्थान की आशा का उल्लेख किया है। हमारी आशा का केंद्र युगांतिक मोक्ष, अंत समय का मोक्ष, अध्याय आठ, श्लोक 20, 24 और 25 है।

परमेश्वर की महिमा को साझा करने की आशा, अध्याय आठ, श्लोक 18, 21 और 30। आदम में जो खो गया था वह अब मसीह में बहाल हो गया है, महिमा बहाल हो रही है। पीड़ा के दौरान आशा.

4:19 में इब्राहीम की तरह, हम असंभव बाधाओं का सामना करते हुए भी भगवान के वादे पर भरोसा करते हैं, 5.3। हम न केवल सीधे तौर पर आशा पर गर्व करते हैं, 5:2, बल्कि एक क्लेश पर भी जो अंततः आशा को मजबूत करता है, 5:3, और फिर अध्याय आठ में। कुछ दार्शनिक और सर्वनाशवादी, और सर्वनाशी यहूदी लेखक आनन्दित होने की बात करते थे, भले ही आप पीड़ित थे। पॉल एक उत्तेजक अलंकारिक श्रृंखला का उपयोग करता है।

यह चरमोत्कर्ष या सोराइट्स का एक अलंकारिक उपकरण है, इसे कभी-कभी कहा जाता है, जहां एक चीज दूसरे की ओर ले जाती है, दूसरे की ओर ले जाती है। वह कहते हैं कि हमारा कष्ट, हमारा क्लेश हमें धीरज की ओर ले जाता है और अंततः आशा की ओर ले जाता है। अनन्त जीवन के लिए धीरज विश्वास की एक आवश्यक अभिव्यक्ति है।

उन्होंने इसका उल्लेख अध्याय दो के श्लोक सात में किया है। यदि आस्था दृढ़ विश्वास नहीं है तो विश्वास बचाता नहीं है। कैल्विनवादी और आर्मिनियाई दोनों इस बात पर सहमत हैं।

जो लोग उस बिंदु पर सहमत नहीं हैं वे कैल्विनवाद और आर्मिनियन के कुछ हिस्सों को मिला रहे हैं और मिलान कर रहे हैं और कुछ ऐसा लेकर आ रहे हैं जो सुविधाजनक है। ऐसे लोग थे जिनसे मैं सड़कों पर मिला था। उन्होंने मुझे बताया कि वे थे, मैंने उनसे पूछा कि क्या वे ईसा मसीह को जानते हैं, क्या वे निश्चित रूप से जानते हैं कि वे कहाँ जा रहे हैं।

उन्होंने कहा, हां. और आप उनसे पूछें कि क्यों. उन्होंने 15 साल पहले किसी के साथ प्रार्थना की थी, वे कभी चर्च नहीं गए थे, वास्तव में ईश्वर के बारे में नहीं सोचते थे, यह उनके जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा नहीं था।

यह विश्वास को बचाना नहीं है क्योंकि विश्वास को बचाने का मतलब है कि हम भगवान के पास आते हैं। हम भगवान के पास आते हैं। हम उसके विरुद्ध विद्रोह से बच गए हैं।

तो, धैर्य आवश्यक है. धीरज के बिना विश्वास नहीं बचता। आपके पास वह 11:22 में है। कहीं तुम्हारा भी नाश न हो जाये.

पहला कुरिन्थियों 9:27 जहां पौलुस कहता है, ऐसा न हो कि मैं आप ही त्याज्य हो जाऊं, वा अप्रसिद्ध हो जाऊं। दूसरा कुरिन्थियों अध्याय 13, हम यह देखने के लिए स्वयं का परीक्षण करेंगे

कि आप विश्वास में हैं या नहीं। भरोसा रखें, आपको एहसास होगा कि हम अकामो , अस्वीकृत नहीं हैं।

गलातियों 4.19, मैं तब तक प्रसव पीड़ा में हूँ जब तक कि मसीह तुममें फिर से विकसित न हो जाए। 5.4 मैंने पहले ही उल्लेख किया है और मैं जारी रख सकता हूँ। निश्चित रूप से, जब आप इब्रानियों तक पहुँचते हैं, लेकिन यहाँ तक कि जेम्स अध्याय 5 छंद 19 और 20, 2 पतरस अध्याय 2, और प्रकाशितवाक्य भी कई बार।

किसी भी स्थिति में, पाठ जो कहते हैं, यदि आप विश्वास में बने रहें। अब फिर से, मैं केल्विनवादियों और आर्मिनियाई लोगों के बीच बहस में नहीं पड़ने जा रहा हूँ, लेकिन दोनों सहमत हैं कि आपको दृढ़ रहने की आवश्यकता है। तो, वह क्लेश की बात करता है, परीक्षण किए गए चरित्र को लाता है, डोकिमे, जो परीक्षण में खरा उतरा है, 5.4। जीवन के दबावों के माध्यम से विश्वास को वास्तविक दिखाया जाता है।

इसका पूर्ण होना ज़रूरी नहीं है, लेकिन यह बढ़ता है। हम अडाकामोस की तुलना कर सकते हैं, जो अध्याय 1 और श्लोक 28 में परीक्षण में विफल रहा। यह डोकिमे है।

यह कसौटी पर खरा उतरता है। और आपके पास जेम्स अध्याय 1 श्लोक 2 से 4 और 1 पतरस 1:6 और 7, इत्यादि में समान विचार हैं। प्रामाणिकता वहाँ और 5:5 में आत्मा की मदद से साबित होती है जो किसी के अनन्त जीवन की आशा को प्रमाणित करती है।

यदि आप प्रभु के साथ चल रहे हैं और परीक्षण आ गए हैं और आप अभी भी प्रभु के साथ चल रहे हैं, तो यह आपको आश्वासन देता है। फिलिप्पियों 1 में पॉल कहता है कि वह कहता है, तुम जानते हो, मुझे विश्वास है कि तुम दृढ़ रहोगे। और संदर्भ उन सभी चीजों के कारण है जो आप पहले ही कर चुके हैं, आप जानते हैं, आप समय की कसौटी पर खरे उतरे हैं।

इब्रानियों अध्याय 6 भी कुछ ऐसा ही है। आशा से बेशर्म, 5:5. खैर, उस भाषा में से कुछ भजन 119, श्लोक 116 को उद्धाटित कर सकते हैं, जहाँ एक व्यक्ति को शर्म आ सकती है यदि उसकी आशा झूठी साबित हो। लेकिन हम अपनी आशा पर शर्मिंदा नहीं होंगे।

विश्वासियों को युगांतकारी शर्मिंदगी का सामना नहीं करना पड़ेगा। 116 में आपके पास वह है। पॉल सुसमाचार से शर्मिंदा नहीं है।

और 9:33 और 10:11 में, जहाँ जो कोई उस पर भरोसा करेगा उसे लज्जित नहीं होना पड़ेगा। यहाँ श्लोक 5 में हमारे आत्मविश्वास का आधार क्या है? परमेश्वर की आत्मा में हमारे विश्वास का आधार हमारे लिए परमेश्वर के प्रेम को प्रमाणित करता है। ईश्वर के प्रेम से उसका क्या तात्पर्य है? आप जानते हैं, यहाँ हमारे पास जननात्मक निर्माण के साथ भी यही बात है।

क्या यह हमारे लिए भगवान का प्यार है, भगवान के लिए हमारा प्यार है या एक दूसरे के लिए हमारा प्यार है? ईश्वर के प्रति विश्वासियों का प्रेम 8.28 में प्रकट होता है। भगवान का प्यार हमारे

माध्यम से हो सकता है। 15:30 बजे, हम एक दूसरे के लिए आत्मा से प्यार करते हैं। लेकिन यहाँ सन्दर्भ हमारे लिए ईश्वर के प्रेम का है।

जैसा कि आपने 8.35 और 39 में किया है, कोई भी चीज़ हमें ईश्वर के प्रेम से अलग नहीं करेगी। 5.8 में, परमेश्वर ने हमारे प्रति अपना प्रेम प्रदर्शित किया कि जब हम पापी थे, मसीह हमारे लिए मर गया। तो यहाँ ईश्वर का प्रेम हमारे लिए ईश्वर का प्रेम है।

परमेश्वर की आत्मा हमारे हृदयों में आ गई है और हमें अच्छे परिणाम का आश्वासन देती है क्योंकि परमेश्वर की आत्मा प्रमाणित करती है कि परमेश्वर हमसे प्रेम करता है और परमेश्वर हमारे साथ है। जब हम ईश्वर की आवाज़ सुनने की बात करते हैं, तो आप जानते हैं, ईश्वर बोलने के विभिन्न तरीके हैं। निश्चित रूप से, आप जानते हैं, अधिनियमों में, वह अक्सर इंजीलवाद के बारे में बात करते थे।

यह अधिनियमों का विषय है। तो ये वो चीज़ें हैं जो रिकॉर्ड की जाती हैं। आत्मा कहती है, ऊपर जाओ और इस रथ में शामिल हो जाओ, या नीचे जाओ और उन लोगों को स्वीकार करो जो तुम्हारे पास आए हैं।

लेकिन मुझे लगता है कि ईश्वर हमसे सबसे अधिक बार और सबसे गहराई से जो बातें कहता है, उनमें से एक, हमारे अस्तित्व का सबसे गहरा हिस्सा, यह याद दिलाना है कि वह हमसे प्यार करता है। कभी-कभी हम अपनी क़ानूनी पृष्ठभूमि या ऐसी किसी चीज़ के कारण इसे सुनने के लिए तैयार नहीं हो सकते हैं, लेकिन भगवान हमसे यही बात कर रहे हैं, वह हमारे लिए उनका प्यार है और हम उनके बच्चे हैं। हम इसे अध्याय 8 में देखेंगे। जब मैं वास्तव में एक युवा ईसाई था, तो आप जानते हैं, मुझमें ये भावनाएँ और धारणाएँ थीं, और कभी-कभी यह किसी की सेवा करने के मामले में मेरी मदद करती थीं।

लेकिन कभी-कभी, आप जानते हैं, यह सिर्फ रात के खाने में मैंने जो खाया, उसके कारण अपच होता था। लेकिन एक दिन मैं प्रार्थना कर रहा था और मुझे बस भगवान का एहसास हुआ, मुझे अपने दिल में महसूस हुआ कि भगवान मुझे वह देने जा रहे हैं जो मैंने उनसे मांगा था। और ईश्वर जानता था कि मैं सबसे अधिक क्या चाहता हूँ।

मैं उसे सुनना चाहता था। और मैंने उससे कहा कि मैं उसकी आवाज़ सुनने के लिए अपने कान खोलूँ। और मुझे उम्मीद थी कि वह कीनर की तरह कुछ कहेंगे, मैं तुम्हें बताने जा रहा हूँ कि तुम यह गलत कर रहे हो, यह गलत, यह गलत।

लेकिन इसके बजाय, यह सबसे खूबसूरत प्यार था जो मैंने कभी सुना था। और हर दिन मैं उसे फिर से सुनने के लिए बाहर जाता था। ऐसा नहीं है कि जगह मायने रखती थी, लेकिन, आप जानते हैं, मैं एक युवा ईसाई था, मुझे इसका एहसास नहीं था।

लेकिन यह एक ऐसी जगह थी जहाँ मेरी मुलाकात भगवान से हुई थी। और इसलिए, वापस जाकर उन्हें दोबारा सुनना एक सार्थक बात थी। लेकिन पहली बात जो मैंने उसे कहते हुए सुनी, वह थी मेरे बच्चे, मैं तुमसे बहुत प्यार करता हूँ।

और मैं लंबे समय से आपके इस बात का एहसास होने का इंतजार कर रहा हूँ। क्योंकि आप यह काम और वह काम करने में व्यस्त हैं क्योंकि आपको लगता है कि इससे मुझे खुशी मिलती है। और ऐसा नहीं है कि मैं उन चीज़ों को महत्व नहीं देता।

लेकिन सबसे बढ़कर, मैं तुमसे प्यार करता हूँ। तुम मेरे आलिंगन से क्यों भागते हो? उस दिन से मैं उसके प्यार के बारे में और गहराई से जानने लगा। और एक दिन, यह मेरा पहली बार प्यार था।

मैंने कहा, भगवान, तुम मुझसे कितना प्यार करते हो? एक किशोर की तरह भावुक, शायद पहले प्यार में। और उन्होंने कहा, हे मेरे बच्चे, क्रूस की ओर देखो। यीशु के हाथों में कीलों को देखो।

उसके पैरों में कीलों, बगल में भाला, उसकी भौंह में कांटे देखो। खून देखो. मेरे बेटे, मैं तुमसे इतना ही प्यार करता हूँ।

और मैं इसके बारे में और कहानियाँ बता सकता हूँ। लेकिन मुझे यह एहसास होने लगा कि कोई भी वास्तव में नहीं जान सकता कि ईश्वर वास्तव में कैसा है और उसके प्यार में पागल नहीं हो सकता। और दुनिया के अधिकांश लोग यह नहीं जानते कि ईश्वर कितना दयालु है।

मुझे यह एहसास ही नहीं हुआ कि यह पाठ किस बारे में बात कर रहा था। लेकिन यह पाठ ईश्वर के बारे में बात करता है जिसने हमारे दिलों में अपना प्यार डाला। पवित्र आत्मा के माध्यम से, यह हमें दिया गया था।

अगले तीन पद उस प्रेम को क्रूस के संदर्भ में परिभाषित करते हैं। तो, यह ऐसा है जैसे पवित्र आत्मा हमारे दिलों में आता है, क्रूस की ओर इशारा करते हुए कहता है, कि मैं तुमसे कितना प्यार करता हूँ। यही वह कीमत है जो मैंने चुकाई है ताकि तुम मेरी हो जाओ।

और कोई भी चीज़ हमें ईश्वर के प्रेम से अलग नहीं कर सकती। और यह हमारा आश्वासन है. इस तरह हम जानते हैं कि हम उसके साथ रहेंगे क्योंकि वह हमसे बहुत प्यार करता है।

वह कहते हैं कि ईश्वर का प्रेम आत्मा के माध्यम से उंडेला जाता है, पवित्र आत्मा की भाषा को प्रतिध्वनित किया जाता है जैसे कि योएल 2:28 और 29 और कुछ अन्य ग्रंथों, यशायाह 32, यशायाह 44, यहजकेल 39 में। और यह भी ऐसा ही है, क्योंकि पवित्र आत्मा अक्सर प्रेरणा से जुड़ा होता था, आत्मा बस हमें उस ज्ञान से प्रेरित करती थी। और वह आत्मा को एक उपहार के रूप में बोलता है।

निःसंदेह, भविष्यवक्ताओं ने अंत समय में परमेश्वर के सभी लोगों पर आत्मा उंडेले जाने की बात कही। लेकिन कुछ यहूदी परंपराएँ थीं जो कहती थीं, ठीक है, आप जानते हैं, हमारी पीढ़ी में कोई भी वास्तव में आत्मा के योग्य नहीं है। या हो सकता है कि हिलेल आत्मा के योग्य था, लेकिन उसकी पीढ़ी इस योग्य नहीं थी कि उसे आत्मा प्राप्त करनी चाहिए।

लेकिन गलातियों अध्याय पाँच और पद पाँच, हम सभी के लिए, हमने उपहार के रूप में परमेश्वर से आत्मा प्राप्त किया है। और परमेश्वर का प्रेम, आत्मा छह से नौ छंदों में मसीह के बलिदान की ओर इशारा करता है। मसीह हमारे अपराधों के लिये पकड़वाये गये, 4:25 ।

और अब पॉल उस बिंदु पर विस्तार से बताने जा रहा है। शायद ही कोई व्यक्ति दूसरे के लिए मरता है और फिर केवल किसी अच्छे व्यक्ति के लिए। दोस्तों के लिए मरना एक यूनानी मूल्य था, लेकिन अपने दुश्मनों के लिए कौन मरेगा? परन्तु मसीह हमारे लिये मरा, जबकि हम उसके शत्रु थे।

पापियों, 5:8 वह कहते हैं। 5:9 में क्रोध-योग्य। 5:10 में परमेश्वर के शत्रु। 5:6 से 11 तक व्याख्या करता है कि यीशु हमारे अपराधों के कारण मर रहा है। 4:24 कहता है कि ऐसा इसलिए हुआ क्योंकि यीशु हमारे अपराधों के कारण मर गया।

ठीक है, नहीं, 5:6 से 11 तक यह स्पष्ट किया गया है कि इसका क्या अर्थ है कि यीशु हमारे अपराधों के कारण मर गया। आपके पास यीशु की मृत्यु के विभिन्न पहलुओं का अन्यत्र इलाज है, जैसे कि 5:18 और 19, या 6.3 से 10 में। लेकिन यहां हमारे पास 5:9 में है, यीशु का खून भगवान के क्रोध को शांत करता है।

फिर, सूली पर चढ़ाना मुख्य रूप से खूनी नहीं था। यह उस प्रकार की मृत्यु की केंद्रीय विशेषता नहीं थी। लेकिन वहां खून का जिक्र धार्मिक कारणों से है।

आधुनिक धर्मशास्त्र अक्सर ईश्वर के क्रोध से असहज होता है। पॉल के विपरीत, जो इसके बारे में बात करता है, रोमियों 9:22, 1 कुरिन्थियों 1:18, 3:17, 8:10, 11:30-32, फिलिप्पियों 1:28, 3:19, 1 थिस्सलुनीकियों 1:10, 2: 16, 5:3, 5:9, और रोमियों में 1:18, 2:5, 2:8, 2:12, 3:5, 4:15। देखिए, यदि आप क्रोध पर विश्वास नहीं करना चाहते, तो भगवान पाप से क्रोधित हो सकते हैं। यह बहुत सारा धर्मग्रंथ होगा जिससे आपको निपटना होगा।

लेकिन यह यहाँ मसीह के बलिदानी प्रेम की गहराई को उजागर करता है। यह कुछ बाइबिल और अन्य प्राचीन अवधारणाओं पर फिट बैठता है। यदि आप रक्त को प्रायश्चित के साथ जोड़कर देखना चाहते हैं, तो निर्गमन 29:36, 30:10, 34:25, लेविटिकस, वहाँ कुछ अंश हैं।

रक्त परमेश्वर के क्रोध को शांत करता है, संख्या 16:46। पापबलि को अक्सर प्रायश्चित के साथ जोड़ा जाता है। वहां उदाहरणों का एक पूरा पैराग्राफ। दोष प्रसाद भी।

आपके पास कनानी और हिती रीति-रिवाजों में प्रतिबिम्बित प्रायश्चित है। आपके पास यह ग्रीको-रोमन बुतपरस्ती में है। प्रारंभिक यहूदी धर्म में आपको यह समझ थी।

जिते किम इसके बारे में बात करते हैं। तो, लोगों को यह बात समझ आनी चाहिए थी कि यहां क्या कहा जा रहा है। लेकिन हमारे पास अध्याय पांच, श्लोक 11 में एक अनुभाग सारांश है, या कम से कम मेरा मानना है कि यह संभवतः एक अनुभाग सारांश है।

समापन सारांश बहुत आम थे। मुक्ति भी पुनरुत्थान पर निर्भर करती है। हम 5:9 और 10 और 4:24 से 5:25 तक देखते हैं। 5:11 में शेखी बघारना 5:2 और 3 में हमारे पास चरमोत्कर्ष है। और वह कहता है, हमारे प्रभु यीशु मसीह के माध्यम से।

और वह पैराग्राफ को फ्रेम करता है। इसे इन्क्लूज़ियो कहा जाता है, जहां आप एक ही नोट पर शुरू और समाप्त करते हैं, लेकिन जरूरी नहीं कि आपके पास 5:1 और 5:11 के बीच उलटा समानता हो। तो, अगली बार हम आदम और उसके बीच चल रहे विरोधाभास को देखने जा रहे हैं जिसे वह एक नए आदम के रूप में, मसीह के रूप में चित्रित करता है। लेकिन जैसा कि हम ऐसा करना जारी रखते हैं, आइए याद रखें कि हमारे पास जो कुछ भी है, हमारे पास जो शाश्वत जीवन है, सृजित प्राणियों के रूप में हमारा अस्तित्व हम पर ईश्वर का बकाया है, लेकिन हमारा उद्धार भी ईश्वर पर निर्भर है।

और इसकी भगवान को बहुत बड़ी कीमत चुकानी पड़ती है। यह कभी न भूलें कि भगवान आपसे कितना प्यार करते हैं क्योंकि क्रूस यही साबित करता है।

यह रोमन की पुस्तक पर अपने शिक्षण में डॉ. क्रेग कीनर हैं। यह रोमियों 3:24-5:11 पर सत्र संख्या 6 है।